पदार्पण नयी सदी से–सतयुगी संस्कृति का

आध्यात्मिक तरगें भारत के साथ विश्व–ब्रह्माण्ड को ईश्वरीय आभावलय से सुकून पहुँचाती ही जा रही है। दिनों दिन प्रकृति के अणु–परमाणु की परिशुद्धि हेतु हुये पंच तत्वों की ारीर को डेढ़–दो सौ व ाों तक जीने लायक बना देगें। परम प्रकाश पुंज प्रियतम से आत्मायें इतनी आलोकमय हो जायेगी कि जन्म या मृत्यु की स्वेच्छा स्वीकार कर सकने में समर्थ बन जायेगी। वहाँ के दैवी सम्पदा वाले नर–नारी विचारों की गति से विमान उड़ाती हुई, पदार्थों की तरह संकल्पों का प्रे ाण–सम्प्रे ाण करने लगेगी। स्वर्ग में आज की तरह अंग प्रत्यंग से देह अहंकार की वासना नही आयेगी बल्कि सर्वांग सम्पूर्ण सोलह कला अवतार होते हुये भी सदा आत्मिक भाव का सुखद प्रकाश फैलता रहेगा। इसीलिये तो देवी देवताओं को आज तक भी लोग कमल मुख, कमल नयन, कमल हाथ पाँव वाले कहते हैं।

स्वर्णिम संस्कृति– हम आत्माओं की सतोप्रधानता के कारण ही स्वर्ग में बन–उपवन, फल–फलों की खुशहाली, एक रस बहती हुई खुशबूदार–स्वच्छ सरितायें, कलरव कण्ठों से गीत–संगीत, उछल कूद नृत्य करते हुये पशु–पक्षी, मनभावन भौरे, तितलियाँ, नयनाभिराम पर्वतमालाओं से धरा सदा ही श्रृंगारित रहेगी। सभी तन–मन–धन–जन से इतने समृद्ध होंगे कि किसी भी तरह की इच्छा का द्वन्द नहीं होगा। रस भरे फलों वाले वृक्षों की डालियाँ मन इच्छित स्वादों वाले फल झुक–झुक कर स्वीकार करायेंगी। वृक्ष सदा वाहरी विविध रंग–रूप स्वाद के फलों से लदे रहेंगे जिनका फल तोड़ते ही दूसरे फल वहाँ लग जायेंगे। मौसम और चाँद सितारे इतने निर्मल होंगे कि आधी रात सुप्रभात की तरह प्रतीत होगी। सूर्य ऐसे अक्षांश देशान्तर पर आ जायेगा कि उसकी किरणें वातानुकूलन का आभास देती रहेगी। ाोभनिक गायों से दूध–घी की दरिया बहेगी। स्वर्णिम ऊँचे महलों में मणि–माणिक्य, हीरे–जवाहरात इस तरह जड़े होंगे कि एक दूसरे को प्रतिबिम्बित करते रहने से कृत्रिम प्रकाश की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। विभिन्न प्रकार के अगणित व्यंजन तथा हजारों प्रकार के हल्के वस्त्राभू ाणों से जीवन सजा–धजा ही रहेगी। तन–मन–जीवन इतना सुन्दर व स्वस्थ होगा कि नस–नाड़ियों में बहते हुये खून की झर–झर करती धारा भी दिखाई देगी।

खेल–पाल करते हुये नृत्य–संगीत–चित्रकला जैसे मनभावन वि ाय पढ़ाये जायेंगे। सदा प्रफुल्लित और भारहीन जीवन उनींद लेते ही तरो ताजगी से भर जायेगा। राजा प्रजा सभी सुखी होंगे क्योंकि सभी सम्पदाओं की अटूट भरमार होगी। पारिवारिक भावना से ही सम्बन्ध–संपर्क में आने के कारण ऊँच–नीच का नाम–निशान नहीं रहेगा। स्मार्ट डिजिटल प्रणाली इतनी समुन्नत होगी जायेगी कि सूक्ष्म संयन्त्र संकल्पों के इशारे से बहुत सारा काम कर लेंगे।

आत्मिक वृत्ति से जीवन मुक्ति :– नर–नारी, सुख–दुःख, रात–दिन की तरह आज की दुनियाँ रावण या माया का दुःखदायी राज्य है तो धरा पर परमसुखकारी रामराज्य कभी न कभी अवश्य आयेगा। आज भौतिक साधन सामानों को प्रधानता मिली हुई है तो रामराज्य अवश्य ही आध्यात्मिकता से भरा पूरा होगा। नारकीय दुनियाँ वाले हद के संबंधों–पदार्थों के लिये ही उलझे रहते पर स्वर्ग में उपराम वेहद वृत्ति वाले प्रकाशमान होकर धरा पर सर्व कलायें विखेरते रहेंगे। आध्यात्मिकता का पथ कठिन नहीं है। अधि का अर्थ होता है समीप और आत्मा समझना अर्थात् मैं हूँ ही ाान्त–शुद्ध तथा ज्ञान गुणों ाक्तियों से भरी पूरी आत्मा नर–नारी रूपी तनधारी आत्मायें अपने कर्मनुसार अपना–अपना अभिनय कर रही हैं। दूसरे संबंध ा में ारीर रूपी वस्त्र धारण करते ही पहले सारे कर्मो को भूल नये तरह का खेल ाुरू कर देती हैं। यह जीवन–मृत्यु का खेल कल्प के बाद हूबहू पुनरावृत होता रहता है। देह भान की स्थूलता में सूक्ष्म आत्मा और परमात्मा का संबंध बन ही नहीं पाता जिससे आत्मा रूपी बैटरी डिस्चार्ज होती रहती है। मनमत और परमत को छोड़ परमपिता के स्मृति को सुधारने वाली आत्मा सारे संसार में सुख ाान्ति का सकाश–प्रकाश फैलाती रहती है। बुद्धि की तीव्रता परमाणु के प्रतिकणों को आध्यात्मिकता से कम्पित कर सतोप्रधान बनाता जाता है जिससे निकट भवि य में रूहानियत भरे संबंध, परम सुहावनी प्रकृति और रत्नजड़ित सोने के महल मिलेंगे।

सदा आत्मचेतना बनाये रखने से एक जन्म नहीं, 21 जन्मों के लिये ईश्वरीय स्वराज्य हमें जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में प्राप्त होगा। कहा जाता है कि गुरू वशि ठ की अध्यात्मिक ाक्ति के कारण उनके एक दण्ड के सामने विश्वामित्र की अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित ंसारी सेना हार गयी। देवात्मा श्रीकृ ण के अर्जुन का सारथी बनते ही दुर्योधन की चतुरंगिनी सेना काम की नहीं रही आदि–आदि। इसी प्रकार आध्यात्मिकता से भौतिक जगत भी अवलोकमय बन, तन–मन संबंध और वांस को परम सुखदायी बनाते हुये गीत गाता रहेगा :–

गीत हमारे ाब्द तुम्हारे, सतयुग का आधार बनेंगे।
नृत्य हमारे भाव तुम्हारे, धरणी पर झंकार भरेंगे।।
जैसे दो नदियों का संगम, हर मन को करता मंगलमय।
भर देता है अन्तस्थल में, जैसे अनुपम खिला कमल।।
पु प हमारे गंध तुम्हारी, मधुवन बन संस्कार रचेगी।
गीत हमारे ाब्द तुम्हारे, नवयुग के आधार रहेगी।।
कभी क टमय कुसमय पथ पर,यदि तुम को चलना पड़ जाये,
कलियुग की घनघोर निशा से, जीवन को टूटना पड़ जाये,
दीप हमारे कलश तुम्हारे, क टों का श्रृंगार करेंगे।
गीत हमारे ाब्द तुम्हारे, सृ ट का आधार बनेंगे।।
भूल–भुलैया के जीवन में, हम न कहीं खो जायें,
इससे पहले मिल–जुल करके, नवयुग का अंकुर बो जायें।
हर जन के हम हृदय गुफा को, पुलकित कर बैकुण्ठ रचेंगे।
गीत हमारे ाब्द तुम्हारे, सतयुग का आधार बनेंगे।

हम, जब बापू गाँधी के सिद्धान्तों पर चलकर अजेय, अंग्रेजों से मुक्त हो गये, तो सारे संसार के परमपिता के पद्चिन्हों पर चलकर सब की वृत्तियों में समायी आसुरीयता को नहीं भगा सकते ? आज विज्ञान ही नहीं अध्यात्म में भी श्रद्धा–विश्वास की परम आवश्यकता है। सकारात्मक श्रृद्धावान व्यक्ति ही सदा स्थिर रहकर सभ्यता के ऊँचे सोपानों पर चढ़ सकते हैं। वैज्ञानिक विश्वबन्धुत्व बनाने हेतु सबके लिये आवि कार कर रहे हैं पर आध्यात्मिकता को सहयोगी न बना पाने से दिलों की दूरियाँ बढ़ती ही जा रही हैं। भोग–विलास के कितने भी संसाधन जुटा लीजिये पर आध्यात्मिक महाक्रान्ति के बिना सभी क्रान्तियाँ मूल्यहीन सी दिखती रहेंगी। जब ाान्ति की गहन अनभूति का रसपान करेंगे तभी धर्म, जाति भा ाा भेद के होते आ रहे खूनी खेलों से बच पायेंगे। हम आत्माओं के घर परमधाम का रहने वाला सबका परमपिता परमात्मा एक है तो सभी की विचारधारा भी समान होनी चाहिये और सभी को एक ही घर की भाँति समझ कार्य व्यवहार में आना चाहिये।

भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर :– ोधकर्ताओं ने वैज्ञानिक क्रान्ति लाकर संसार को स्वर्ग बनाने की ठान ली थी, पर वे अभी तक स्वर्ग तक सीढ़ियाँ विछाने वाले प्रदू ाण का हाहाकार और हथियारों का अम्बार ही लगा पाये हैं। अब वैज्ञानिक आवि कारों को ही परमसुखी जीवन की तरफ जाने का आधार नहीं माना जाना चाहिये। समान विधि–विधानों के अपनाने पर भी लोग दिन व दिन रोग,शोक की चक्की में पिसते जा रहे हैं। समुन्नत कहे जाने वाले पाँच सितारा संस्कृति के नयनों का तेज और मुखमंडल का ओज गायब होता ही जा रहा है। अब जरूरत है आध्यात्मिक मूल्यों से दूर हटी जीवनशैली को पुनः पुनर्जीवित करने की। मन को ऊर्ध्वगामी

बनाकर ईश्वरीय गुणों को कलात्मक ढंग से व्यक्त करते हुये हम तथ्यों पर भी ाासन कर सकेंगे। विचारों, संस्कारों को सत्वगुण से उभरते ही जीवन आलोकमय बन धरा पर ुभ का वरदान लुटाने लगेगा। उन्नीसवीं सदी का सहारा लेकर वीसवीं सदी में पागलों का अम्बार लगाने पर भी इक्कीसवी सदी में उन्हें और समुन्नत किये जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। समुन्नत जीवन की एक नई परम्परा लाने हेतु सारे संसार की भावनायें तेजी से उमड़–घुमड़ रही हैं।

हम ज्ञानसूर्य प्रजापिता ब्रह्मा और ज्ञानचन्द्रमा सरस्वती के नूरे रतन हैं तो हमें भी ुभ ग्रह, नक्षत्र बनकर इक्कीसवीं सदी के खुले आकाश में चमकते–दमकते प्रवेश करना चाहिये। बाप समान बनना चाहिये।

ब्रह्मा सूरज, सरस्वती चन्दा, हम हैं ज्ञान सितारे।
सारे जग को रोशन करते, शिव के नयन हम प्यारे।।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com